B.A.(Hons) Part-I
Paper II
Abnormal Psychology
By - Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon
(Buxar)
VKSU, Ara.

PART-A

मानसिक दुर्बलता
MENTAL - RETARDATION

असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानसिक न्यूनता का अध्ययन बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बौद्धिक विकास के क्रम में किसी-किसी व्यक्ति की मानसिक विकास में रुकावट आ जाती है। फलतः उसकी मानसिक क्षमता या बौद्धिक क्षमता अपूर्ण या न्यून हो जाती है। मानसिक क्षमता की ऐसी न्यूनता या अपूर्णता ही Mental retardation कहलाता है। इस दुर्बलता के कारण व्यक्ति को अपना सामान्य जीवन-यापन करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा समायोजन सम्बन्धी अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। मानसिक दुर्बलता के लिये अन्य कई तरह के शब्दों को उपयोग में लाया जाता है जिसमें Amentia, Feeble mindedness (क्षीणमनस्कता), Subnormal Mind (अधो-मस्तिष्क अवस्था) एवं Hypophrenia आदि ज्यादा प्रचलित है। लेकिन इसके लिये मानसिक कमजोरी या मानसिक दुर्बलता (Mental Deficiency) शब्द ही सबसे ज्यादा उपयुक्त लगता है।

मानसिक दुर्बलता की परिभाषा मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से देने का प्रयास किया है। APA के अनुसार-

"मानसिक दुर्बलता का सम्बन्ध वर्तमान कार्यकारी की एक परिसीमा से है, जिसमे अधोऔसत बौद्धिक क्रिया होती है, जो 18 वर्ष की उम्र तक अभिव्यक्त हो जाती है।"

इसी प्रकार DSM IV में भी इसी आशय के परिभाषा दी गई है

मानसिक दुर्बलता सार्थक रूप से अधोऔसत बौद्धिक कार्यकारी है, जिसमे समायोजी व्यवहारों में कमी ~~होती है~~ पायी जाती है

"A Condition of arrested or encomplete development of mind specially characterised by Subnor-mality of intelligence."

पेज ने मानसिक दुर्बलता का बड़ा ही सुन्दर परिभाषा दी है:-

"मानसिक दुर्बलता मानसिक विकास की अधःसामान्य अवस्था है, जो जन्म से अथवा आरंभिक बाल्यकाल से ही मौजूद रहती है और इस अवस्था की मुख्य विशेषता बुद्धि का सीमित होना ~~होता है~~ तथा सामाजिक अयोग्यता का होना होता है।"

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर उसका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है, जिसे हम निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं:-

1) मानसिक दुर्बलता बौद्धिक ~~विकास~~ क्षमता का अधोसामान्य विकास की अवस्था है।

2) व्यक्ति अपने उम्र के अनुसार समायोजी व्यवहार नहीं कर पाता है।

3.) 18 वर्ष की उम्र तक इसका लक्षण परिलक्षित होने लगता है।

4) यह बाल्यावस्था या आरंभिक बाल्यावस्था से मौजूद रहता है।

5) इसमें सीमित बुद्धि होते हैं, फलतः आत्मदेखरेख और समाज-पयोगी कार्य करने में अक्षम होता है।

मानसिक दुर्बलता की प्रमुख विशेषताएं:-

1.) सीमित बौद्धिक क्षमता:- मानसिक दुर्बलता के शिकार व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता उम्र के अनुसार सामान्य से नीचे रहती है। इनकी बुद्धि कम होती है। इसीलिए इसे Subnormal mental State कहा जाता है।

2.) शारीरिक न्यूनता:- यह देखने को मिलता है कि ऐसे लोगों में सामान्य लोगों की तुलना में शारीरिक विकास भी उचित नहीं हो पाता है। उनका शारीरिक बनावट गड़बड़ होता है। कद नाटा, सिर बड़ा, चमड़ा मोटा और पीला, होंठ भद्दे, और आँखें विचित्र होते हैं। इसीलिए उनका ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक क्षमता कम एवं भाषा संबंधित विकृति भी पाई जाती है।

3) सीमित समायोजन व्यवहार:- अपनी दैनिक कार्य ठीक से नहीं कर पाते हैं; फलतः Adjustment ...

4) सामाजिक अयोग्यता :- मानसिक दुर्बलता के शिकार व्यक्तियों में सामाजिक अभियोजन की योग्यता में कमी पाई जाती है। इनकी बुद्धि सीमित होती है। फलतः सामाजिक एवं असामाजिक व्यवहार को समझ नहीं पाते हैं और समाजविरोधी व्यवहार कर बैठते हैं। उचित-अनुचित में भेद नहीं कर पाते हैं। इनमें आत्मसंयम एवं आत्मविश्वास का अभाव होता है।

5) जीविकोपार्जन में अक्षमता :- ये अपना भरण-पोषण करने में असफल होते हैं। टरमन का मानना है कि ऐसे लोगों को बचाने एवं उनमें सुधार लाने में समाज की आय का बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है। एक अध्ययन बताता है कि लगभग 40%. मानसिक दुर्बल व्यक्ति अपनी जीविका नहीं चला सकते हैं और 46%. आंशिक रूप से अपना जीविका चला पाते हैं, मात्र 15%. व्यक्ति ही अपना जीविका स्वयं चला सकते हैं।

6) शिक्षा सम्बन्धी अयोग्यता :- मानसिक दुर्बल व्यक्ति औसतन पिछड़ेपन के शिकार होते हैं। इनकी thinking निम्न कोटि की होती है ये प्रायः रट कर याद तो कर लेते हैं पर जल्द ही भूल भी जाते हैं, इन्हें मोटा काम सीखाया जा सकता है।

7) सीमित प्रेरणा एवं संवेग :- इनमें सामान्य संवेगों तथा सामाजिक प्रेरणाओं में कमी पाई जाती है। फलतः ऐसे लोग परिस्थिति के अनुकूल संवेग दिखलाने में असमर्थ होते हैं उनमें लक्ष्य प्राप्त करने व दूसरे से मेल-मिलाप बढ़ाने में कमी पाई जाती है।

(8) अन्य मानसिक क्रियाएँ :- मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त व्यक्तियों में अन्य मानसिक क्रियाएँ भी गड़बड़ होती हैं। उनका Span of memory, Span of attention, thought Process आदि अत्यंत सीमित होती है।

(9) व्यक्तित्व :- ये अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं। इनमें अस्वाभाविक विनम्रता एवं उदासी का भाव पाया जाता है। ये सीधे सादे होते हैं। चालाक लोग उन्हें आसानी से ठग लेते हैं। समाजविरोधी कार्य भी ये बुद्धि की कमी के चलते करते हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर मानसिक दुर्बलता के शिकार व्यक्ति

मानसिक दुर्बलता के कारण :-

मानसिक दुर्बलता के लिये कौन से कारक उत्तरदायी हैं, यह निर्णय लेना बड़ा ही कठिन कार्य है। यह बहुत ही अधिक विवादास्पद प्रश्न है। इसके बावजूद कुछ सामान्य कारण हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1.) अनुवंशिकता (Heredity) :- इस संदर्भ में अध्ययनों से जानकारी मिलती है कि मानसिक दुर्बलता का एक मुख्य कारण वंशपरम्परा है। जिन बच्चों के माता पिता Mental deficiency से ग्रस्त रहते हैं उनके बच्चों में भी यह समस्या आने की प्रबल संभावनाएँ होती हैं। इस संदर्भ में गोडार्ड महोदय का अध्ययन काफी महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन कालिकाक नामक व्यक्ति के परिवार पर किया गया। कालिक की दो शादियाँ थीं। एक पत्नी मंदबुद्धि की थी और दूसरी सामान्य बुद्धि की थी। मंदबुद्धि की पत्नी से जन्मे सब बच्चा Feeble minded का हुआ। इतना ही नहीं इसकी कई पीढ़ियों में मंद बालक पैदा होते गए। दूसरी पत्नी से पैदा किये सभी बच्चे Normal child निकले। इतना ही नहीं लगभग छः पीढ़ियों का अध्ययन किया गया, और यही निष्कर्ष निकला। स्पष्ट है कि Mental deficiency का सम्बन्ध Heredity से है।

इसी प्रकार रोजानाफ ने जुड़वा बच्चों पर अध्ययन किया और इस बात की पुष्टि की कि मानसिक दुर्बलता के लिए वंशपरम्परा एक महत्वपूर्ण कारण है।

2.) जन्म आघात (Birth trauma) :- मानसिक दुर्बलता का

को मिलता है कि यदि गर्भवती माँ सिफलिश या रूबेला या खसरा से ग्रस्त हो जाती है तो बच्चा मंद बुद्धि का पैदा हो सकता है।

4) नशा! - कुछ आधुनिक अध्ययन यह बताते हैं कि यदि गर्भवती माँ नशा लेती है या नशीली औषधियों का लगातार सेवन करती है तो उसके बच्चे मानसिक दुर्बलता लेकर पैदा हो सकते हैं। गर्भावस्था में यदि माँ Alcohol, Cocaen, Quinine, Arsenic या Lead या कार्बन मोनोक्साइड से उत्पन्न नशा लेती है तो उसके बच्चे मंद बुद्धि के हो सकते हैं।

5) अन्तःस्रावी उपद्रव! → अन्तःस्रावी ग्रंथियों का संतुलित स्राव नहीं होने पर कई प्रकार की समस्याओं का आगमन हो जाता है। जैसे थायोराइड ग्रंथि से निकलने वाला स्राव thyroxin कम मात्रा में स्रावित होता है तो बच्चे बौनापन के शिकार होते हैं और मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त हो सकते हैं। Pituitary gland के कम स्राव से बच्चा Mangolism का शिकार हो सकता है। एड्रीनल का प्रभाव भी बौद्धिक विकास पर पड़ता है।

6) क्रोमोजोम्स की गड़बड़ी! - सामान्यतौर पर एक सामान्य व्यक्ति में 23 जोड़े यानी 46 क्रोमोजोम्स पाये जाते हैं; लेकिन अगर किसी एक व्यक्ति में एक क्रोमोजोम्स कम होता है तो वह Tuner Syndrom से ग्रस्त हो जाता है। इसी तरह किसी बच्चा में एक क्रोमोजोम अधिक यानी 46 के जगह पर 47 हो जाता है तो वह Kelinefelter Syndrom से ग्रस्त होता है। अतः गुणसूत्रीय गड़बड़ी भी मानसिक क्षमता एवं शारीरिक विकास में भूमिका निभाते हैं

7) संतुलित भोजन का अभाव! - बच्चों को संतुलित आहार नहीं मिलने पर बौद्धिक विकास अवरुद्ध हो जाती है। इतना ही नहीं यदि गर्भवती माँ को संतुलित भोजन, और विटामिन नहीं मिलता है तो उससे पैदा बच्चे पर भी इसका प्रभाव पड़ता है और बौद्धिक विकास उचित मात्रा में नहीं हो सकता है।

8) मस्तिष्कीय अंगों की क्षति! - यदि बच्चे की मस्तिष्क के सूक्ष्म हिस्सों में कोई क्षति होती है तो मानसिक दुर्बलता आ सकती है माँ के गर्भाशय में, प्रसवपूर्व X ray के विकिरण से भी ऐसी क्षति हो सकती है। इसके अलावे बच्चा के मस्तिष्क में चोट लगने या दुर्घटना होने से भी या Brain tumer होने पर भी मानसिक मंदता आ सकता है।

Scanned with CamScanner

अज्ञात प्रसवपूर्व प्रभाव:- इसके तहत कुछ वैसे कारणों को रखा जाता है जो गर्भ में पल रहे बच्चों को उसकी माँ से लग जाता है। माँ के गर्भ में पल रहे भ्रूण का मानसिक विकास प्रभावित हो जाता है। एनेनसिफैली एक ऐसा ही मानसिक दुर्बलता है, जिससे ग्रस्त बच्चों की लघुमस्तिष्क तथा बृहद्‌मस्तिष्क एवं खोपड़ी की चौड़ी हड्डियाँ नहीं होते हैं जिसके चलते बच्चा का बौद्धिक विकास नहीं हो पाता है।

सामाजिक सांस्कृतिक वंचन:- कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जो बच्चे अभाव या वंचन के शिकार होते हैं वे बौद्धिक विकास में पीछड़ जाते हैं। ऐसे बच्चों का लालन पालन गरीबी भरे माहौल में होते हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति सही तरीके से नहीं हो पाती है जिसके कारण ऐसे बच्चे हीनभावना, कुंठा एवं दब्बुपन आदि से ग्रस्त हो जाते हैं इसके अतिरिक्त माता पिता का असामयिक निधन, तलाक, कलह आदि का प्रतिकूल प्रभाव बच्चों के ~~सर्वांगीण~~ सर्वांगीण विकास पर पड़ता है। तिरस्कृत बच्चे भी मानसिक मंदन के शिकार हो जाते हैं और वे बौद्धिक विकास में पीछे छुट जाते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि मानसिक दुर्बलता के कई कारण हैं। अतः किसी एक कारण को ज्यादा तरजीह न देकर सभी कारणों को ध्यान में रखकर निर्णय लेनी चाहिए। Zigler & Hadapp (1986) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि मानसिक दुर्बलता के लिए आंगिक कारकों (Organic factors) के अलावे Non-organic factors दोनों का हाथ होता है।

RSSingh
13.05.2020
HoD, Psychology
D.K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner